"इंकलाब जिंदाबाद!" 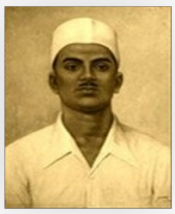 "साम्राज्यवाद मुर्दाबाद!"

भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव के शहीद दिवस पर सभी शहीदों को इन्कलाबी सलाम

"सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,
देखना है ज़ोर कितना बाज़ू-ए-कातिल में है!"

23 मार्च 1931 – इस दिन भारत के तीन क्रांतिकारी, **शहीदों भगत सिंह राजगुरु और सुखदेव** ने देश की आज़ादी के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। उनकी शाहादत हर भारतीय के दिल में हमेशा अमर रहेगी ।

शहीद भगतसिंह भारतीय इंकलाब के कीर्तिस्तम्भ हैं। वैचारिक तौर पर जो स्पष्टता मात्र **23** साल की उम्र में भगतसिंह के पास थी, वो सभी साम्राज्यवादी मान्यताओं को नकारते है। भगत सिंह का एक नारा है साम्राज्यवाद मुर्दाबाद, साम्राज्यवाद से आश्य है कि मनुष्य द्वारा मनुष्य का तथा एक राष्ट्र द्वारा दूसरे राष्ट्र का शोषण, यह जब तक समाप्त नहीं कर दिया जाता तब तक मानवता को उसके दुखों से छुटकारा मिलना असम्भव है,

“हम मानते हैं कि स्वतन्त्रता पर प्रत्येक मनुष्य का अमिट अधिकार है। हर मनुष्य को अपने श्रम का फल पाने जैसा सभी प्रकार का अधिकार है और प्रत्येक राष्ट्र अपने मूलभूत प्राकृतिक संसाधनों का पूर्ण स्वामी है। अगर कोई सरकार जनता को उसके इन मूलभूत अधिकारों से वंचित रखती है तो जनता का केवल यह अधिकार ही नहीं बल्कि उनका यह आवश्यक कर्तव्य भी बन जाता है कि ऐसी सरकार को वह समाप्त कर देना चाहिए। क्रान्ति एक नियम है, क्रान्ति एक आदर्श है और क्रान्ति एक सत्य है। हमारे देश के नौजवानों ने इस सत्य को पहचान लिया है। उन्होंने बहुत कठिनाइयाँ सहते हुए यह सबक सीखा है कि क्रान्ति के बिना हम किसी भी तरह के परिवर्तन की अवधारणा को अपने साथ लेकर नही चल सकतें” यह प्रराग्राफ हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के घोषणापत्र से लिया गया है।

आज भारत साम्राज्यवाद व पूंजीवाद के जूते के नीचे पिस रहा है। इसमें करोड़ों लोग आज अज्ञानता और ग़रीबी के शिकार हो रहे हैं। भारत की बहुत बड़ी जनसंख्या जो मज़दूरों और किसानों की है, उनको क्रोनी पूंजीवाद के दबाव एवं आर्थिक लूट ने पस्त कर दिया है। भारत के मेहनतकश वर्ग की हालत आज बहुत गम्भीर है। उसके सामने दोहरा ख़तरा है –विदेशी कम्पनियों का एक तरफ़ से और भारतीय कम्पनियों के धोखे भरे हमले का दूसरी तरफ़ से। भारतीय पूँजीवाद विदेशी पूँजी के साथ हर रोज़ बहुत से गँठजोड़ कर रहा है। कुछ राजनीतिक नेताओं का प्रभुतासम्पन्न का दर्जा स्वीकार करना भी शासन का नियम हो गया है। सभी प्रगतिशील लोगों का विश्वास है कि देश को अब जन-आंदोलन से ही असली स्वतंत्रता मिलेगी। वे जिस जन-आंदोलन के लिए प्रयत्नशील हैं और जिस जन-आंदोलन का रूप उनके सामने स्पष्ट है उसका अर्थ यह नहीं है कि पूँजीपति शासकों तथा उनके पिट्ठुओं के खिलाफ केवल जन-संघर्ष हो, बल्कि इस संघर्ष के

साथ-साथ नवीन सामाजिक वैकल्पिक आर्थिक-सामाजिक व्यवस्था का स्वरूप स्पष्ट करना चाहिए। जन-आंदोलन पूंजीवाद, वर्गवाद जातिवाद तथा कुछ लोगों को ही विशेषाधिकार दिलाने वाली प्रणाली का अन्त कर देगी। यह राष्ट्र को अपने पैरों पर खड़ा करेगी, उससे नवीन राष्ट्र और नये समाज का जन्म होगा। जन-आंदोलन से सबसे बड़ी बात तो यह होगी कि वह मज़दूर तथा किसानों का राज्य कायम कर उन सब असामाजिक अवांछित तत्वों को समाप्त कर देगी जो देश की राजनैतिक शक्ति को हथियाये बैठे हैं।

आज देश के नागरिकों से सभी सूचनाएं छिपाई जा रही है, और उनके समक्ष भ्रामक सूचनाएं प्रस्तुत की जा रही है। इन सूचनाओं से देश का वातावरण व संतुलन बिगड़ रहा है, जिन लोगों को हमने आज सत्ता सौंप रखी है, ऐसे लोगों की भाषा इतनी असभ्य है की हम लोग ऐसी भाषा का प्रयोग अपने घरों मे भी नही करते है, और यह उसे पूरे देश मे प्रचारित कर रहे है, इस पूरी व्यवस्था इतना अन्याय व शोषण गहरा हो चुका है कि अब देश में आमूल-चूल परिवर्तन की आवश्यकता है। हम यह कहना चाहते हैं कि संघर्ष छिड़ा हुआ है और यह संघर्ष तब तक चलता रहेगा, जब तक कि शक्तिशाली तबका भारतीय जनता और श्रमिकों की आय के साधनों पर अपना एकाधिकार जमाए रखेंगे। सभी वर्गों को परस्पर लड़ने से रोकने के लिए वर्ग-चेतना की जरूरत है। गरीब मेहनतकश व किसानों को स्पष्ट समझना होगा, कि तुम्हारे असली दुश्मन पूंजीपति हैं, इसीलिए शहीद भगत सिंह ने अपनी जेल डायरी मे वे लिखते है कि "लोकतंत्र सिद्धांत: राजनीतिक और कानूनी समानता की व्यवस्था है किन्तु ठोस और व्यावहारिक रुप मे यह झूठ है, क्योंकि जब तक आर्थिक सत्ता मे भारी असमानता है, तब तक कोई समानता नही हो सकती, न राजनीति मे और न कानून के सामने|..... पूंजीवादी शासन मे लोकतंत्र की सारी मशीनरी शासक अल्पमत को श्रमिक बहुमत की यातनाओं के जरिये सत्ता मे बनाये रखने के लिये काम करती है| "इसलिये भगत सिंह केवल एक क्रांतिकारी नही है वह एक विचार है, एक दर्शन है|

नागरिक अधिकार मंच, सहारनपुर 23 मार्च को शहीद दिवस के रुप में मनाने का आह्वान आप सभी साथियों से करता है।

कार्यक्रम

23 मार्च 2025, प्रात:- 11.00 बजे, दिन:- रविवार

स्थान:- रोटरी क्लब, जनमंच के पीछे, सहारनपुर

सिगरेट वर्कर्स यूनियन I T C लि0 सहारनपुर, को0आ0 शुगर वकर्स यूनियन सरसावा, ईट भट्टा मजदूर यूनियन सहारनपुर, रोडवेज कर्मचारी संयुक्त परिषद (उ0 प्र0), चीनी उधोग कामगार यूनियन नानौता सहारनपुर, नौजवान भारत सभा सहारनपुर, यू0 पी0 रोडवेज (सेवानिर्वत) कर्मचारी वेल्फेयर एसोसियशन (उ0प्र0), अखिल भारतीय वन–जन श्रमजीवी यूनियन।